मार्च २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

जैसी संगत वैसी रंगत

बालमित्रों,

संपादकीय

"जैसी संगत वैसी रंगत" हम सब बचपन से ही यह कहावत सुनते आ रहे हैं फिर भी आज मुझे आपके साथ इस बारे में नई-नई बातें करने का मन हो रहा है।

परम पूज्य दादा श्री ने भी संग को बहुत महत्व दिया है। वे हमेशा कहते थे कि "जैसी संगत वैसी रंगत"। अतः हमेशा अच्छे व्यक्ति के संग में रहना चाहिए।

यह तो हम समझ गए हैं कि अच्छे संग में रहना हितकारी है लेकिन बुरे व्यक्ति का संग किस तरह नुकसानदायक है, यह भी समझना उतना ही महत्वपूर्ण है।

तो आइए, इस अंक में हम अच्छे और बुरे, दोनों संगों के असरों और उनके लक्षणों के बारे में समझें और बुरी संगत से छूट जाएँ।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

जैसी संगत वैसी रंगत

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंकः १२
अखंड क्रमांकः ४८
मार्च २०१७

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादा जी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : दादा, कई बार ऐसा होता है कि मुझे सूझ नहीं पड़ती। किन संयोगों के कारण सूझ पर आवरण आते हैं?

दादाश्री : जब निम्न कोटि के लोगों के परिचय में आते हैं तब। निम्न कोटि के लोगों के परिचय में आने से आवरण आ जाते हैं। वे उलझन में होते हैं और हमें भी उलझा देते हैं।

कम सूझ वालों के साथ रहने से सूझ कम हो जाती है, खत्म नहीं हो जाती। क्योंकि हल्के लोगों की सूझ हल्की होती है, उनके परिचय में आने से हमारी सूझ कम होती जाती है इसलिए हमारे काम नहीं आती, यूज़लेस हो जाती है।

यदि मूर्ख की संगत मिलेगी तो मूर्ख बनते जाएँगे और समझदार की संगत मिलेगी तो समझदार बन जाएँगे। चोर की संगत मिलने से चोर बन जाएँगे।

यदि आप ऊँचे लोगों के परिचय में रहोगे तो आपकी सूझ खिलती जाएगी। उसमें आपको कुछ प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा। परिचय का ही फल आएगा! समूह में एक-दूसरे का असर होता है।

गलत परिचय से सब बिगड़ता ही रहता है, बहुत बिगड़ जाता है। बुरी संगत इंसान का सर्वस्व परिवर्तन कर देती है इसलिए कुसंग पोइज़न है, इससे दूर रहना चाहिए। कुसंग का असर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और शरीर पर हो जाता है। अधिकतर लोग कहते हैं कि "मैं शराबी के साथ घूमता हूँ लेकिन मैं शराब नहीं पीऊँगा।" लेकिन जब से तू उसके साथ घूमने लगेगा तभी से तू पीना शुरू कर देगा। संग एक दिन अपना असर दिखाए बिना नहीं रहेगा इसलिए संग सुधारो।

अतः जिसका संग सुधर गया उसका सबकुछ सुधर गया और जिसका संग बिगड़ गया उसका सबकुछ बिगड़ गया। सब से बड़ा जोखिम कुसंग है। जैसे दूध और दही नज़दीक हों तो क्या होगा? दूध फट जाएगा न? दूध फट जाएगा फिर चाय नहीं बन सकेगी।

इसलिए कोई भी बुरा संग घुसने मत देना। "जैसी संगत वैसी रंगत" और "जैसी सोहबत, वैसा असर"।

यह तो नई ही बात !

कुसंग निश्चय बल को खत्म कर देता है।

कुसंग का असर तो टी.बी. से भी भयानक है। टी.बी. तो एक जन्म बिगाड़ती है, यह तो अनंत जन्म बिगाड़ देता है।

एक ही साल के कुसंग का असर, पच्चीस-पच्चीस साल तक रहता है।

सत्संग में चाहे जितने भी कष्ट हों, वे अच्छे हैं। और कुसंग में चाहे जितना सुख हो लेकिन बेकार।

कुसंग मिलने से मन बिगड़ जाता है और मन बिगड़ने से तो अंदर से भगवान चले जाते हैं।

अच्छी संगत, कितनी गुणकारी!

अंधेरी रात थी। आसपास सन्नाटा छाया हुआ था। रोहन को अपने ही दिल की धड़कन सुनाई दे रही थी। एक दीवार के पीछे छिपकर उसने सुनसान गली में झाँका। उसे वह गुंडा कहीं नहीं दिखा, जिससे जान बचाकर वह भागा, तभी पुलिस के सायरन की आवाज़ सुनाई दी और उसे थोड़ी राहत महसूस हुई।

"अब उठ, स्कूल नहीं जाना, तुझे अलार्म नहीं सुनाई दे रहा?" प्रियंका ने उसे झिंझोड़ा।

आँखें खोलकर रोहन ने अपनी बहन की ओर देखा, "ओह दीदी, मुझे ऐसा लगा कि यह पुलिस के सायरन की आवाज़ थी। मैंने बहुत बुरा सपना देखा। एक गुंडा मेरे पीछे पड़ा था और मैं..."

प्रियंका ने उसकी बात काटते हुए कहा, "बस, बस, रोहन, तुम और तुम्हारे खतरनाक सपने! अपने फालतू फ्रेन्ड्स के साथ दिनभर एक्शन मूवी देखते हो और हिंसक वीडियो गेम खेलते रहते हो तो ऐसा ही होगा न! रोहन, मैं सही कह रही हूँ, अच्छी संगत रख और इन फालतू फ्रेन्ड्स का साथ छोड़ दे! नहीं तो भटकता ही रहेगा। समझा तू? और अब जल्दी तैयार हो जा। तेरी स्कूल बस आ जाएगी।"

बैड पर से उतरते हुए रोहन बड़बड़ाया, "टें, टें, टें। सुबह-सुबह इनकी "टें, टें" शुरू हो गई। इंसान को चैन से उठने भी नहीं देते।"

लेकिन अगर देखने जाएँ तो रोहन को शायद ही मालूम हो कि चैन क्या होता है? उसे तो "बोर्डम" की बीमारी हो गई थी।

स्कूल बस में घुसते हुए रोहन को देखकर अखिल ने आवाज़ लगाई, "रोहन, यह देख मेरे पास क्या है?" अखिल ने अपना नया मोबाईल फोन दिखाया।

रोहन अखिल के पास गया। तभी उसकी नज़र कोने में बैठे हुए एक लड़के पर पड़ी। उसने सोचा, "यह कौन है?" लेकिन उसने तुरंत ही अपनी नज़र हटा ली और अखिल के गैंग में शामिल हो

गया। "वाउ यार, सो कूल" रोहन ने अखिल का फोन हाथ में लेते हुए कहा।

"और यह देखो", अखिल ने सभी को अपने फोन में कुछ दिखाया और सब तालियाँ बजाकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

ड्राइवर अंकल ज़ोर से बोले, "देखो, मैं तुम्हें लास्ट वॉर्निंग दे रहा हूँ। यदि शैतानी बंद नहीं की, तो मैं प्रिन्सिपल मैडम से शिकायत कर दूँगा।"

अखिल ने अपने दोस्तों को देखकर कहा, "यह ड्राइवर मेन्टल केस है।" और फिर से सब ज़ोर से हँसने लगे।

रोहन की नज़र फिर से उस कोने में बैठे हुए लड़के पर पड़ी। उसके चेहरे पर एक अलग ही तेज था। अखिल के मज़ाक पर वह हँसा नहीं था फिर भी उसके जैसी प्रसन्नता किसी के चेहरे पर नहीं थी। रोहन ने फिर से सोचा, "कौन है यह? लगता है, न्यू एडमिशन है।"

स्कूल आ गया और सभी बच्चे उतर गए। रोहन को उस नए लड़के के साथ बात करने का मौका नहीं मिला।

शाम को तो स्कूल बस में सुबह से ज्यादा शैतानी हो रही थी जैसे कि झू में प्राणियों को खुला छोड़ दिया गया हो। लेकिन कोने में बैठे हुए उस लड़के को तो इस मस्ती में कोई रुचि ही नहीं थी। वह तो अपनी ही मस्ती में था। अपनी किताब में वह इतना मग्न था कि रोहन उसके पास आकर कब बैठ गया, उसका उसे पता ही नहीं चला।

रोहन ने उस लड़के के पास जाकर कहा, "हाय, आइ एम रोहन, नया एडमिशन लिया है?"

वह लड़का बोला, "ओह...हाय। सॉरी, मेरा ध्यान नहीं था। मेरा नाम आदर्श है। हाँ, नया एडमिशन लिया है। इनफेक्ट मेरे लिए तो सब नया है। थोड़े समय पहले ही मेरे पापा का यहाँ ट्रान्सफर हुआ है।"

रोहन को उत्सुकता हुई, "क्या पढ़ रहे हो?"

"कहानियाँ। शॉर्ट स्टॉरीज़ मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। तुम्हें यह बुक चाहिए?" आदर्श ने पूछा।

रोहन ने सोचा,

"यह दिखता तो शांत है, लेकिन अच्छा-भला फ्रेन्डली है।"

रोहन ने कहा, "हाँ, श्योर। थेन्क यू।"

उस रात रज़ाई ओढ़कर, रोहन ने वीडियो गेम हाथ में ली। लेकिन फिर उसे कहानियों की किताब याद आई। बैग में से किताब निकाली और पहला पेज खोला। कहानी शुरू हुई...

"जब-जब मुझे गलत मौज-शौक करने का लालच होता है, तब-तब मुझे शुलक पगी की याद जरूर आती है।

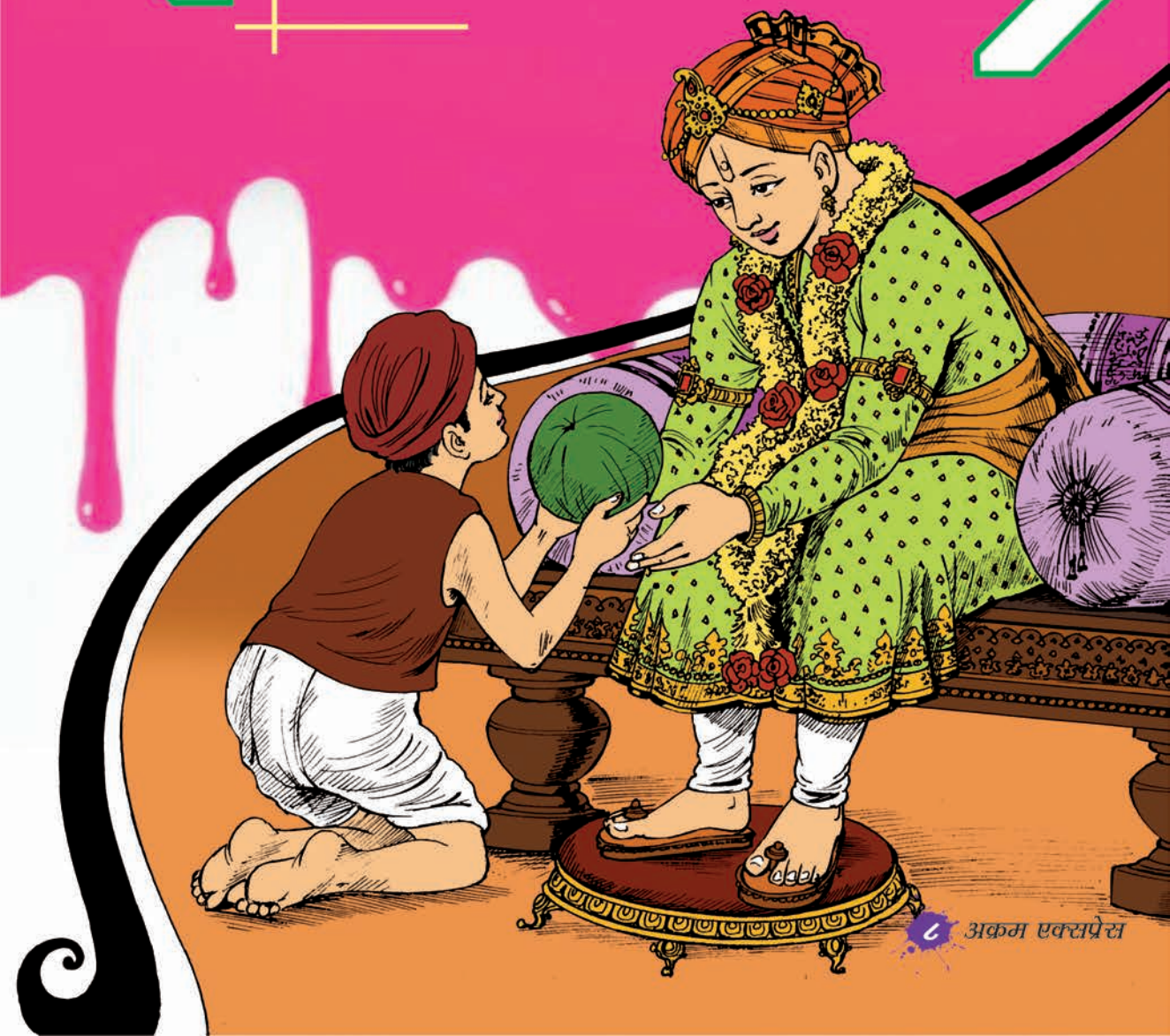

यह कहानी एक छोटे से बच्चे "शुलक पगी" की है। शुलक पगी के पिता जी ने अपने खेत में खरबूजे बोए थे। उसने सोचा, "जैसे ही पहला खरबूजा उगेगा, मैं सब से पहले उसे श्री जी महाराज के लिए ले जाऊँगा।"

थोड़े समय के बाद खरबूजे पक गए और वह बच्चा श्री जी महाराज के लिए पहला खरबूजा लेकर निकल पड़ा। रास्ते में खरबूजे की मीठी-मीठी सुगंध से बच्चे ने सोचा, "चलो न, खरबूजा खा लेता हूँ।"

"लेकिन पहला खरबूजा तो महाराज को चढ़ाना है", यह निश्चय याद करके वह आगे बढ़ता गया।

थोड़ा आगे जाकर उसने सोचा, "महाराज को तो सभी कितने बहुमूल्य उपहार देते हैं, मेरे इस छोटे से खरबूजे की क्या कीमत? लाओ खा लूँ।"

लेकिन फिर उसने अपने मन को समझाया, "नहीं, यह खरबूजा महाराज के लिए है, और इसे महाराज को ही देना चाहिए।"

इस तरह अपने मन के साथ संघर्ष करते-करते वह बच्चा श्री जी महाराज के पास पहुँचा और उसने वह खरबूजा उनको दे दिया। महाराज को बच्चे के मन के संघर्ष के बारे में पता चल गया था। खरबूजे का एक टुकड़ा खाकर महाराज ने बाकी का प्रसाद सभा में बाँटने को कहा। लालच को जीतकर, खुद के निश्चय पर वह बच्चा अडिग रहा और इसीलिए श्री जी महाराज उस बच्चे पर अत्यंत खुश हुए और उसे पाँच किलो शक्कर उपहार में दी।

कहानी पूरी होते ही रोहन की आँखें बंद हो गईं। जब वह सुबह उठा तब वह ज्यादा फ्रेश था।

स्कूल बस में आदर्श ने रोहन की ओर हाथ बढ़ाया, "हाय रोहन"। रोहन आदर्श के पास जाकर बैठ गया।

आदर्श ने पूछा, "कहानी पढ़ी?"

रोहन ने कहा, "हाँ... शुलक पगी की।"

"वह तो मेरी फेवरीट है।" आज आदर्श बात करने के मूड में था। "जब-जब मुझे गलत मौज-शौक करने का लालच होता है, तब-तब मुझे शुलक पगी की याद ज़रूर आती है। यदि लालच टल जाए, तो भगवान हमसे कितने प्रसन्न होते हैं। गलत मौज-शौक के मज़े के बजाय अगर भगवान हम पर राज़ी रहते हैं तो इस बात की खुमारी कुछ और ही होती है।" इन शब्दों को बोलते ही आदर्श के चेहरे पर आनंद आ गया। आदर्श की बात रोहन को स्पर्श कर गई।

तभी अचानक स्तुति ज़ोर से चिल्लाई। अखिल और उसके दोस्त ज़ोर से हँसने लगे।

अखिल ज़ोर से बोला, "स्तुति, हमने तुझे उल्लू बनाया! यह तो प्लास्टिक की छिपकली है!" स्तुति की आँख में आँसू आ गए।

ड्राइवर अंकल ने पीछे मुड़कर देखा और कहा, "आज तो तुम्हें देखता हूँ।"

उस शाम बस में एक अजीब सा सन्नाटा था। प्रिन्सिपल मैडम के ऑफिस में अखिल और उसके गैंग को पनिशमेन्ट मिली थी और उनके पेरेन्ट्स को स्कूल में बुलाने के लिए एक लेटर भी भेजा गया था।

पेरेन्ट्स को स्कूल में बुलाने के डर से अखिल की आँखें रो-रोकर सूज गई थीं। दीदी के कहे हुए शब्द रोहन को याद आ गए। उसने सोचा, "यदि आज सुबह मैं भी अखिल के साथ बैठा होता तो मेरी भी रोने की बारी आ गई होती। आदर्श के साथ बिताया हुआ कुछ ही समय, मेरे लिए कितना लाभदायक साबित हुआ! यदि कुछ ही समय की अच्छी सोहबत इतनी गुणकारी है, तो हमेशा के लिए अच्छी सोहबत क्यों नहीं रखूँ?"

और रोहन आदर्श के साथ बैठ गया।

अल्सर

परीक्षा का अंतिम दिन था...
परीक्षा पूरी होने के बाद स्कूल के गेट पर मिलते हैं। सब की मूवी की टिकट मेरे पास है।
थियेटर में एअरकंडिशन चालू था, लेकिन मयंक का पसीना छूट रहा था।
अगर मैं फेल हो गया तो! लाइफ में फर्स्ट टाइम फेल होऊँगा। मम्मी-पापा क्या कहेंगे?
पूरा साल शशांक और उसके गैंग के साथ मूवी, होटल और पार्टियों में निकाल दिया। यह मैंने क्या कर दिया? अब क्या होगा?
आज पहली बार मयंक का मूवी में बिल्कुल भी ध्यान नहीं था। मूवी पूरी होते ही...
आज रात मेरे घर पार्टी हो जाए?
सॉरी यार, मैं नहीं आ पाऊँगा। मनीष भाई ने सोसाइटी के सभी बच्चों के लिए अपनी छत पर पार्टी रखी है। मुझे उसमें जाना है।

पार्टी में सभी उत्साहित थे।

सभी कितना मज़ा कर रहे हैं। मैं भी हर साल सभी के साथ इसी तरह मज़ा करता था।

लेकिन आज मयंक सभी के साथ होते हुए भी सब से दूर था। पूरा साल उसने अपनी सोसाइटी के फ्रेंड्स को छोड़कर, नए फ्रेंड्स के साथ मस्ती की थी।

पार्टी खत्म होते ही,

मयंक तू थोड़ी देर रुकेगा? मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।

श्योर, मनीष भाई! मैंने पूरे साल आपकी कोई भी बात नहीं सुनी है, लेकिन आज ज़रूर सुनूँगा।

छत पर अब उन दोनों के सिवाय और कोई भी नहीं था।

मयंक तुझे क्या हुआ है? तू स्वस्थ नहीं लग रहा।

मयंक ने दोनों हाथों में अपना मुँह छिपा लिया।

मनीष भाई! मुझे बहुत डर लग रहा है। आज की परीक्षा बहुत खराब गई है। मैं ज़रूर फेल हो जाऊँगा।

मुझे पता है कि आपने कई बार मुझे शशांक और उसके गैंग के साथ न जाने के लिए कहा था, लेकिन मैंने आपकी नहीं सुनी।

मयंक तुम्हें याद है, पिछले साल मैं अपने दोस्त राहुल के साथ नेपाल गया था?

हाँ...

वहाँ एक धर्मशाळा के बाहर मैंने एक व्यक्ति को देखा। उसके पैर में अल्सर हो गया था। लोग उस पर दया करके कुछ पैसे देकर चले जाते थे।

हमें उस व्यक्ति को हॉस्पिटल ले जाकर उसका इलाज करवाना था। लेकिन वहाँ के गाइड ने हमें रोक दिया।

क्यों?

गाइड ने हमसे कहा कि, “इस व्यक्ति को ठीक होने की कोई इच्छा ही नहीं है। लोगों की दया खाकर बैठे-बैठे पैसे लेने में ही उसे सुख लगता है।”
खराब सोहबत भी उस अल्सर की तरह ही है। जैसे अल्सर व्यक्ति के शरीर को खा जाता है, वैसे ही खराब सोहबत व्यक्ति के जीवन को खा जाती है।
जैसे उस व्यक्ति के लिए हॉस्पिटल के दरवाज़े खुले होते हुए भी, उसे ठीक नहीं होना था, वैसे ही खराब सोहबत में पडा हुआ व्यक्ति भी गंदगी में ही सुख मानता है और जीवन खत्म कर देता है।
मयंक को मनीष भाई की बात का मतलब समझ में आ गया। उसने मनीष भाई के दोनों हाथ पकड़ लिए।
लेकिन मनीष भाई, मुझे तो ठीक होना है। मुझे अपने हॉस्पिटल में एडमिट करोगे न?
मनीष भाई मुस्कराए। छत पर अब ठंड हो गई थी लेकिन बुरी सोहबत में से बाहर निकलने के निश्चय के कारण, मयंक के दिल में इससे भी ज्यादा ठंडक थी।

मीठी यादें

एक ब्रह्मचारी भाई हर वीकेन्ड, आसपास के गाँवों में सत्संग करने जाते थे। एक बार नीरू माँ ने १८-१९ साल के लड़के को उन ब्रह्मचारी भाई के साथ भेजा। उसके मम्मी-पापा नीरू माँ के पास सत्संग में आते थे। वह लड़का थोड़ा डिप्रैस था। उसे थोड़ी आउटिंग मिले और सत्संग मिले, इस हेतु से नीरू माँ ने उस लड़के को उन ब्रह्मचारी भाई के साथ सत्संग में भेजा।

ब्रह्मचारी भाई को ऐसा विचार आया कि नीरू माँ ने उसे उनकी मदद के लिए भेजा है। किसी लड़के को मदद के लिए भेजा, ऐसा सोचकर उन ब्रह्मचारी भाई का मान ऊपर चढ़ गया। उनका लेवल कुछ ऊँचा हो गया है, इसलिए उन्हें असिस्टेन्ट मिला है, ऐसा उन्हें लगा।

सोमवार की सुबह उन ब्रह्मचारी भाई ने खुद के अंदर जो-जो विचार खड़े हुए उसे एक फुल स्केप पेपर पर लिखकर नीरू माँ को दिया। नीरू माँ ने पेपर पढ़ा और फिर उन्होंने उन भाई को कहा कि वे कुछ समय के लिए सत्संग करने जाना बंद रखें।

उस समय उन भाई को नीरू माँ की आँखों में करुणा ही दिखाई दी।

ज्ञानी का कितना अजब-ग़ज़ब का प्रोटेक्शन होता है। जो जगत् कल्याण के मार्ग में आगे बढ़ रहे हैं, वे मान के घोड़े पर चढ़ न जाएँ। साथ ही उन्हें ऐसा रक्षण भी देते हैं कि वे मोक्ष मार्ग से दूर न हो जाएँ और बहुत ही प्रेम से प्रकृति के रोगों में से बाहर निकाल देते हैं।

रास्ता ढूँढिए।

चलो खेलें...

नीचे दी गई दीयासलाई में से कोई भी एक दीयासलाई को इस तरह हटाए कि जवाब ८ आए।

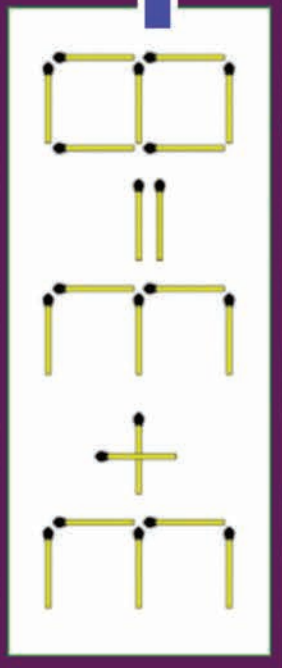

बाजू में दिए गए चित्र में से छुपे हुए ६ WORD ढूँढिए।

महाराष्ट्र में महान संत तुकाराम हो गए हैं। संत तुकाराम के पास एक गरीब ब्राह्मण अपनी बेटी की शादी के लिए पैसे माँगने आया। लेकिन संत तुकाराम के पास ब्राह्मण को देने लायक कुछ भी नहीं था इसलिए उन्होंने ब्राह्मण को गाँव के शिवा नामक धनवान लुहार के पास भेज दिया। शिवा तुकाराम को बिल्कुल भी पसंद नहीं करता था।

जब शिवा को पता चला कि तुकाराम ने इस ब्राह्मण को भेजा है, तब उसने गुस्से में आकर एक पुराना पीतल का सिक्का देकर ब्राह्मण को रवाना कर दिया।

ब्राह्मण तो निराश हो गया। एक छोटे से पीतल के सिक्के से तो क्या काम हो पाएगा?

तुकाराम के पास आकर ब्राह्मण ने सारी बात बताई। तुकाराम ने वह सिक्का आग में फेंक दिया। संगोयवश सिक्का सोने का बन गया। गरीब ब्राह्मण के आनंद की सीमा न रही। ब्राह्मण तो अब जिससे भी मिलता उससे तुकाराम के बनाए हुए सोने के सिक्के की बात करता।

यह बात शिवा लुहार ने भी सुनी। उसने सोचा, "ज़रूर तुकाराम के पास कोई चमत्कारी विद्या होनी चाहिए। उनके साथ रहकर क्यों न मैं वह विद्या सीख लूँ?"

ऐसा सोचकर शिवा, तुकाराम के पास गया और जैसे वह तुकाराम का शिष्य बनने आया हो ऐसा ढोंग करने लगा, "मुझे अपना जीवन सुधारना है। कुछ दिन मुझे अपने साथ रहने की अनुमति दीजिए।"

संत तुकाराम ने शिवा की विनती तुरंत स्वीकार कर ली और इस तरह चमत्कारी विद्या सीखने के लालच से शिवा तुकाराम के साथ रहने लगा।

थोड़े दिन तुकाराम की जीवन शैली देखने के बाद शिवा को एहसास हुआ कि संत तुकाराम के पास ऐसी कोई चमत्कारी विद्या नहीं है लेकिन उनके साथ कुछ ही दिन रहने से, उसको अपने अंदर परिवर्तन होने का एहसास हुआ।

सिर्फ संत तुकाराम को देखने से ही शिवा के अंदर बदलाव आ गया था। उसका मन भक्ति की ओर मुड़ गया था।

संत तुकाराम के पास जाकर शिवा ने कबूल किया और कहा, "मुझे माफ करना। मैं आपके पास पीतल को सोना बनाने की चमत्कारी विद्या सीखने आया था लेकिन सच बताऊँ तो मुझे भक्ति की ओर मोड़कर, आपने मेरा लोभ से सना हुआ पीतल जैसा मन सोने का बना दिया है।"

देखा बालमित्रों, अच्छी सोहबत का कितना चमत्कारी असर होता है।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

"ज़रूर तुकाराम के पास कोई
चमत्कारी विद्या होनी चाहिए।
उनके साथ रहकर क्यों
न मैं वह विद्या सीख लूँ?"

गुरुकुल में आमंत्रित पूज्य श्री

टीम- Ego Hospital

स्वागत

रंगोली

भोजन

इन्फॉरमल

वक्त के साथ ज्ञान

ग्रुप फोटो

पुरस्कार वितरण

आप्तपुत्रों के साथ इन्फॉरमल

"अक्रम एक्सप्रेस" पत्रिका की माहिती - फॉर्म नं. ४ (रूल नं.८)

१. प्रकाशन स्थल : सीमंधर सिटी, अडालज-३८२४२१,जिला-गांधीनगर

२. प्रकाशन का समय : प्रतिमास

३. मुद्रक : अंबा ऑफसेट, राष्ट्रीयता : भारतीय,

पता - पार्श्वनाथ चेम्बर्स के बेसमेन्ट में, नई आर.बी.आई के पास, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-१४

४. प्रकाशक : महाविदेह फाउन्डेशन से डिम्पल महेता, राष्ट्रीयता : भारतीय,

पता : सीमंधर सिटी, अडालज-३८२४२१, जिला: गांधीनगर

५. संचालक : डिम्पल महेता, राष्ट्रीयता : भारतीय, पता: ऊपर के अनुसार

६. मालिक का नाम : महाविदेह फाउन्डेशन, राष्ट्रीयता : भारतीय, पता: ऊपर के अनुसार

मैं डिम्पल महेता, जाहिर करता हूँ कि उपर्युक्त माहिती मेरे जानने में और मान्यता अनुसार सही है।

दि. ८-३-२०१७, अहमदाबाद। महाविदेह फाउन्डेशन से डिम्पल महेता (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

1

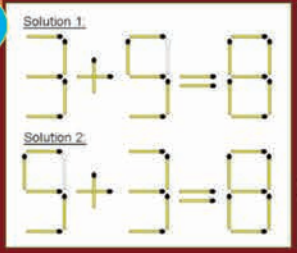

2

पज़ल के जवाब

3

1)FISH 4)HOT
2)BOY 5)TREE
3)NICE 6)WAVE

Akram Express
March 2017
Year : 4, Issue : 12
Conti. Issue No.: 48

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

होली की मौज-मस्ती में छिपी है मिठास,
रंग और गुलाब में छिपा है ढ़ेर सारा प्यार...
हमेशा मीठी रहे आपकी बोली,
खुशियों से भर जाए आपकी झोली...
आप सब को मेरी तरफ से

हैप्पी होली...

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** *हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा.* **AGIA4313#** *और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद* **##** *हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा.* **AGIA4313##** *अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** *करें।*

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, *२.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published